हिन्दी

खण्ड-अ (वस्तुपरक प्रश्न)

1. **(i)** **(क)** साहित्य में

(ii) **(क)** अनेक उपदानों का मिश्रण

(iii) **(ख)** यक्ष

(iv) **(ग)** जो आर्यों के अधीन न थे

(v) **(घ)** दो

(vi) **(क)** कुबेर

(vii) **(ख)** I और II

(viii) **(घ)** रूक्मणि

(ix) **(ख)** क्योंकि यहाँ अनेक तरह की प्रजातियाँ आ चुकी है

(x) **(ग)** कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत है।

2. **(i)** **(घ)** संचार और जनसंचार की

(ii) **(ग)** बोलचाल के शब्द

(iii) **(ग)** एडवोकेजी

(iv) **(क)** पुस्तकें व पत्र–पत्रिकाएँ

(v) **(घ)** संवाददाता

3. **(i)** **(क)** सभी विकल्प सही है

(ii) **(घ)** क्योंकि उसके स्नेह से वह अपनी जीवन यात्रा को पूरा कर सका

(iii) **(क)** उसमें नव स्फूर्ति आ गई

(iv) **(ख)** जीवन पथ पर उसे जिस जिससे स्नेह नहीं मिला

(v) **(ग)** सबकी यादें

अथवा

(i) **(क)** प्राकृतिक आपदा

(ii) **(घ)** कोई हैलीकाप्टर उन्हें बचाने छत पर आएगा।

(iii) **(क)** जम्मू और कश्मीर का सौंदर्य वापिस लौटेगा।

(iv) **(क)** दूसरों को बचाने के कार्य में जुटी है।

(v) **(घ)** पूरे शहर में पानी भर गया है।

4. **(i)** **(ग)** असमर्थता को

(ii) **(ग)** सभी विकल्प सही है

(iii) **(क)** जब अपाहिज व्यक्ति और दर्शक की मनःस्थिति एक जैसी हो जाएगी

(iv) **(घ)** कार्यक्रम की व्यावसायिक सफलता और लोकप्रियता

(v) **(ग)** अपाहिज व्यक्ति और दर्शक

5. **(i)** **(ख)** गतिशीलता

(ii) **(क)** स्वयं की

(iii) **(घ)** लोकतंत्र

(iv) **(ग)** कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही है तथा कारण (R) तथा कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

(v) **(ग)** (i) और (ii)

6. **(i)** **(ग)** भौतिकता को

(ii) **(क)** किशन दा

(iii) **(ग)** अलगाव भरा

(iv) **(क)** आधुनिकता

(v) **(क)** दत्ता जी राव

(vi) **(ग)** रतनाप्पा

(vii) **(ख)** वसंत पाटील की दोस्ती

(viii) **(क)** रबी की

(ix) **(घ)** एक कला

(x) **(ग)** 50 हजार से अधिक

खण्ड-ब (वर्णनात्मक प्रश्न)

7. **(i)** 'शब्द' साहित्य की प्रत्येक विधा का आधारभूत अंग है। किन्तु 'नाटक और कविता के लिए शब्द' का विशेष महत्व होता है। नाटयशास्त्र में नाटक के अंतर्गत बोले जाने वाले शब्दों को नाटक का शरीर कहा गया है। कहानी, उपन्यास आदि में शब्दों के द्वारा किसी विशेष स्थिति, वातावरण या फिर कथानक का वर्णन, विश्लेषण आदि करते हैं। कविता–लेखन के अंर्तगत शब्द, बिंबों और प्रतीकों में बदलने की क्षमता भी रखते हैं और इसकी कारण कविता ही नाटक के सबसे ज्यादा करीब जान पड़ती है। नाटक में प्रयुक्त शब्दों में दृश्यों को सृजित करने की अत्यधिक क्षमता होनी चाहिए जिससे वह लिखे और उच्चारित किए गए शब्दों से भी ज्यादा उस तथ्य को ध्वनित करें जो लिखा या बोला नहीं जा रहा है।

(ii) जनसंचार के प्रमुख कार्य निम्नलिखित है –

(i) सूचना देना (ii) शिक्षित करना

(iii) मनोरंजन करना (iv) एजेंडा तय करना

(v) निगरानी करना (vi) विचार–विमर्श के लिए मंच उपलब्ध कराना

(iii) बीट रिपोर्टिंग और विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सबसे महत्वपूर्ण अंतर यह है कि बीट रिपोर्टिंग के लिए सवांददाता को संबंधित विषय के बारे में जानकारी और दिलचस्पी होना पर्याप्त है जबकि विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए सामान्य खबरों से आगे बढ़कर विषय से जुड़ी घटनाओं, मुद्दों, समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करके पाठकों या दर्शकों को वास्तविकता बतानी होती है।

8. (i) मेरे सपनों का भारत

भारत देश मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। मुझे अपने भारतीय होने पर गर्व का अनुभव होता है। मेरा देश संसार के सभी देशों से निराला है और संसार के सब देशों से प्यारा है। मैं भारत को विश्व के शक्तिशाली देश के रूप में देखना चाहता हूँ। मैं ऐसे भारत का सपना देखता हूँ, जो भ्रष्टाचार, शोषण और हिंसा से मुक्त हो। मेरे सपनों का भारत 'सुशिक्षित भारत' है। उसमें अनपढ़ता, निरक्षरता और बेरोजगारी का कोई स्थान नहीं है। मैं चाहता हूँ कि हमारे देश के नियोजक ऐसी शिक्षा व्यवस्था लागू करें, जिसके बाद व्यवसाय या नौकरियाँ सुरक्षित हो। कोई भी व्यक्ति अशिक्षित न हो और कोई भी शिक्षित बेरोजगार न हो। मैं चाहता हूँ कि भारत सांप्रदायिक दंगों–झगड़ों से दूर रहे। सब में आपसी भाईचारा और प्रेम का संबंध हो। राष्ट्रीय एकता का संचार हो। जो सम्मान भारत का प्राचीन काल में था वही सम्मान, मैं पुनः उसे प्राप्त कराना चाहता हूँ।

मैं फिर से रामराज्य की कल्पना करता हूँ, जिसमें सभी लोगों को जीने के समान अवसर प्राप्त हो सके। भारत एक बार फिर 'सोने की चिड़िया' बन जाए। मेरे सपनों का भारत वह होगा, जो राजनीतिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और वैज्ञानिक आदि भिन्न दृष्टियों से उन्नति के पथ पर अग्रसर होगा। भावी भारत के सपनों की पूर्णता के लिए आवश्यक है कि हमारे देश का प्रत्येक नागरिक देश की प्रत्येक कुरीति को समूल नष्ट करने का दृढ़ संकल्प करें क्योंकि देश में बदलाव लाना देश के नागरिकों पर ही निर्भर करता है। मैं अपने सपनों के भारत को पूरी तरह से समृद्ध देखना चाहता हूँ।

(ii) कंप्यूटर : आज की जरूरत

कंप्यूटर वास्तव में, विज्ञान द्वारा विकसित एक ऐसा यंत्र है, जो कुछ ही क्षणों में असंख्य गणनाएँ कर सकता है। कंप्यूटर ने मानव जीवन को बहुत सरल बना दिया है। कंप्यूटर द्वारा रेलवे टिकटों की बुकिंग बहुत आसानी से और कम समय में की जा सकती है।

आज किसी भी बीमारी की जाँच करने, स्वास्थ्य का पूरा परीक्षण करने, रक्त–चाप एवं हृदय गति आदि मापने में इसका भरपूर प्रयोग किया जा रहा है। रक्षा क्षेत्र में प्रयुक्त उपकरणों में कंप्यूटर का बेहतर प्रयोग उन्हें और भी उपयोगी बना रहा है।

आज हवाई यात्रा में सुरक्षा का मामला हो या या उड़ाने की प्रक्रिया, कंप्यूटर के कारण सभी जटिल कार्य सरल एवं सुगम हो गए हैं। संगीत हो या फिल्म, कंप्यूटर की मदद से इनकी गुणवत्ता को सुधारने में बहुत मदद मिली है। जहाँ कंप्यूटर से अनेक लाभ हैं, कंप्यूटर से कुछ हानियाँ भी हैं। कंप्यूटर पर आश्रित होकर मनुष्य आलसी प्रवृत्ति का बनता जा रहा है। कंप्यूटर के कारण बच्चे आजकल घर के बाहर खेलों में रूचि नहीं लेते और इस पर गेम खेलते रहते हैं। इस कारण से उनका शारीरिक और मानसिक विकास ठीक से नहीं हो पाता। फिर भी कंप्यूटर आज के जीवन की आवश्यकता है। अगर हम इसका ढंग से प्रयोग करे, तो हम अपने जीवन में और तेजी से प्रगति कर सकते हैं।

(iii) प्रातःकाल की सैर

प्रातःकाल की सैर से मन प्रफुल्लित तथा तन स्वस्थ्य रहता है। स्वस्थ व्यक्ति ही समर्थ होता है और यह सर्वमान्य सत्य है कि वही इच्छित कार्य कर सकता है। वही व्यापार, सेवा, धर्म आदि हर क्षेत्र में सफल हो सकता है। व्यक्ति तभी स्वस्थ रह सकता है जब वह व्यायाम करे। व्यायाम में खेल–कूद, नाचना, तैराकी, दौड़ना आदि होते हैं, परन्तु ये तरीके हर व्यक्ति के लिए सहज नहीं होते। हर व्यक्ति की परिस्थिति व शारीरिक दशा अलग होती है। ऐसे लागों के लिए प्रातःकाल की सैर से बढ़िया विकल्प नहीं हो सकता। प्रातःकाल में सैर करने से हम आज के प्रदूषित वातावारण में भी थोड़ी शुद्ध हवा ले सकते है।

यदि व्यक्ति नियमित रूप से प्रातःकाल की सैर करे तो उसे अधिक फायदा ले सकता है। प्रातः सैर से मष्तिष्क को भी फायदा होता है। सैर के समय निरर्थक चिंताओं से दूर रहना चाहिए। प्रातःकालीन सैर के लिए उपयुक्त स्थान का होना भी जरूरी है। घूमने का स्थान खुला व साफ–सुथरा और प्रदूषण रहित होना चाहिए। हरी घास पर नंगे पैर चलने से आँखों की रोशनी बढ़ती है तथा शरीर में ताजगी आती है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यह नियम सर्दी में लागू नहीं होता।

अत्यधिक ठंड से नंगे पैर चलने से व्यक्ति बीमार हो सकता है। हरित क्षेत्र में सैर करनी चाहिए। इसके लिए नदियों–नहरों व खेतों के किनारे, पार्क, बाग–बगीचे आदि भी उपयोगी स्थान माने गए हैं। खुली सड़कों पर वृक्षों के नीचे घूमा जा सकता है। यदि ये सब कुछ उपलब्ध न हो तो खुली छत पर घूमकर लाभ उठाया जा सकता है। प्रातःकालीन सैर से तन–मन प्रसन्न हो सकता है। यह सस्ता व सर्वसुलभ उपाय है।

(iv) राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका

किसी भी राष्ट्र के निर्माण और उसके विकास में सबसे बड़ी भूमिका युवाओं की होती है। इस बात का इतिहास साक्षी है कि आज तक समाज में जो भी परिवर्तन या सुधार हुआ है, वह युवाओं के बल पर ही हुआ है। राम ने जब रावण का संहार किया, तक वे युवा थे। कंस का वध करने वाले कृष्ण भी युवक थे। शंकराचार्य, चंद्रगुप्त, महाराणा प्रताप, शिवाजी, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहन राय, भगतसिंह, सुभाष, नेहरू, गाँधी आदि सभी युवावस्था में ही सामाजिक परिवर्तन के पुण्य कार्य में लग गए थे।

युवा वही होता है, जिसके मन में परिवर्तन कर सकने की इच्छाशक्ति एवं बल हो, जो अन्याय देखकर दुःखी हो सकता है, अपनी एवं दूसरे की प्रसन्नता में नाच और झूम सकता है और जो दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझे, और जो अपनी कल्पनाओं को साकार करने के लिए सर्वस्व दाव पर लगा सकता है। वर्तमान मे हमारे राष्ट्र के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। अशिक्षा, गरीबी, असमानता, शोषण सांप्रदायिकता और वर्गभेद ऐसी चुनौतियाँ है, जिनका मुकाबला किए बिना समाज का नवनिर्माण संभव नहीं है।

प्रायः युवा उत्साही होते है इसलिए वे शीघ्र ही आंदोलन का रास्ता अपना लेते हैं। युवाओं को इंजीनियर बनना है, बुल्डोजर नही। यद्यपि परिस्थिति के अनुसार कभी–कभी विध्वंस का रास्ता भी अपनाना पड़ता है, लेकिन वह भी सृजन के लिए।

युवा वर्ग को देश निर्माण की ओर मोड़ने का एक उपाय है – युवाओं को समय–समय पर कल्याणकारी, रचनात्मक कार्यक्रमों में लगाना। यद्यपि इसके लिए एन.एस.एस.एन.सी.सी. और स्काउट जैसी संस्थाएँ विद्यमान है, लेकिन सच्ची भावना के अभाव में ये संस्थाएँ अनुपयोगी सिद्ध हो गई है।

किसी देश की उन्नति उसके परिश्रमी, लगनशील, पुरूषार्थी तथा चरित्रवान नागरिकों से ही संभव है। भारत के युवा भी चरित्रवान बनकर देश मे व्याप्त बुराईयों को समाप्त कर देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। अंततः हम ये कह सकते हैं कि युवाओं के योगदान के बिना देश के प्रगति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

9. **(i)** रेडियो नाटक सुनने को ध्यान में रख कर लिखा जाता है जबकि सिनेमा और रंग मंच के लेखन को दृश्य के आधार पर लिखा जाता है .रेडियो नाटक में भाव भंगिमा का ध्यान रखने की आवश्यकता नहीं होती किन्तु है सिनेमा और रंग मंच के लेखन में भाव भंगिमा का विशेष ध्यान रखा जाता है। रेडियो नाटक में मंच सज्जा पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती है किन्तु सिनेमा और रंग मंच के लेखन में मंच सज्जा पर बहुत अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

(ii) समाचार लेखन की की सबसे लोक प्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली उलटा पिरामिड–शैली (इंवर्टेड पिरामिड स्टाइल) है। यह शैली कहानी या कथा लेखन की शैली के ठीक उलटी है जिसमें क्लाइमेक्स उलटा पिरामिड में समाचार का ढाँचा बिलकुल आखिर में आता है। समाचार को पढ़ते समय समाचार के आरंभ में ही उस विषय की पूरी जानकारी दे दी जाती है। फिर घटते क्रम में धीरे–धीरे उन खबरों को आगे बढ़ाते हुए अंत किया जाता है।

(iii) विशेष लेखन क्या है? अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल, अर्थ–व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों संबंधित घटनाएँ, समस्याएँ आदि से संबंधित लेखन विशेष लेखन कहलाता है। इस प्रकार के लेखन की भाषा और शैली समाचारों की भाषा–शैली से अलग होती है। खेल, अर्थ–व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग तकनीक शब्द का प्रयोग होता है। अतः उस क्षेत्र में प्रयुक्त होनेवाली भाषा का प्रयोग किया जाता है।

10. **(i)** कवि कहता है कि दिन ढलने पर वह जब घर की ओर कदम बढ़ाता है, तो यह देखकर उसे सुखद अनुभूति होती है कि अपने–अपने प्रतीक्षारत प्रियजनों से मिलने के लिए व्याकुल जीव थका हुआ होने के बावजूद कितनी स्फूर्ति से घर की ओर जा रहे हैं। वह सोचता है कि उसकी प्रतीक्षा तो कोई नहीं करता। उसके लिए तो कोई व्याकुल नहीं होता। इस विचार के मन में आते ही उसकी गति शिथिल हो जाती है और वह धीरे–धीरे कदम बढ़ाते हुए, अपने घर की ओर अग्रसर होता है।

(ii) कवि को कविता के अस्तित्व या भविष्य के बारे में संदेह है। उसे आशंका है कि औद्योगीकरण के कारण मनुष्य यांत्रिक होता जा रहा है। उसके पास भावनाएँ व्यक्त करने या सुनने का समय नहीं है। प्रगति की अंधी दौड़ से मानव की कोमल भावनाएँ समाप्त होती जा रही हैं। वह मशीन बनता जा रहा है, कविता का भाव समझने का वक्त ही उसके पास नहीं है, मनुष्य ने स्वयं को सीमित कर लिया है जबकि कविता के लिए मुखर होने की आवश्यकता होती है। अतः कवि को कविता का अस्तित्व खतरे में दिखाई दे रहा है।

(iii) निराला की सरोज–स्मृति में पुत्री (सरोज) के मृत्यु–शोक तथा भ्रातृशोक में डूबे राम के इस विलाप की तुलना करें तो श्रीराम का शोक कम प्रतीत होता है क्योंकि निराला की बेटी की मृत्यु हो चुकी थी जबकि लक्ष्मण अभी केवल मूर्छित ही थे अभी भी उनके जीवित होने की संभावना बची हुई थी साथ ही संतान का शोक अन्य किसी शोक से बढ़कर नहीं होता।

11. (i) दीवाली की शाम को घर स्वच्छ तथा पवित्र बनाया गया है। घर को खूब सजा दिया गया है। माँ बच्चे के लिए चीनी मिट्टी के चमकदार खिलौने लाई है। उस रूपवती के चेहरे पर एक आभा है। वह अपने बच्चे के घरौंदे को सजाती है तथा उसमे एक दीप जलाती है। बच्चा प्रसन्न हो जाता है। अपने बच्चे की प्रसन्नता से ही माँ का चेहरा गर्व से फूला हुआ है।

(ii) जब बच्चे पतंग उड़ाते हैं, तो उनकी इच्छा होती है कि उनकी पतंग सबसे ऊँची रहे, क्योंकि पतंग के माध्यम से वे सारे ब्राह्मांड में घूम लेना चाहते हैं। वे कल्पना की रंगीन दुनिया में खो जाते है, इसलिए उनके लिए पृथ्वी का प्रत्येक कोना अपने आप सिमटता चला जाता है अर्थात् पतंग उड़ाने के समय बच्चों के सामने पृथ्वी का कोना–कोना सिमट जाता है।

(iii) कवि कहता है कि जिस प्रकार ज्यादा काली सिल अर्थात् पत्थर पर थोड़ा–सा केसर डाल देने से वह धुल जाती है अर्थात् उसका कालापन खत्म हो जाता है, ठीक उसी प्रकार काली सिल को किरण रूपी केसर धो देता है अर्थात् सूर्योदय होते ही हर वस्तु चमकने लगती है।

12. (i) स्त्री को यह मानवाधिकार प्राप्त है कि वह निर्णय कर सके कि वह अपना विवाह किससे करना चाहती है अथवा वह विवाह करना चाहती भी है या नहीं। भक्तिन की बेटी का विवाह उसके जेठ के बड़े बेटे के साले से बिना उसकी इच्छा के करा दिया गया, जिसे भक्तिन की बेटी पसंद नहीं करती थी। वह लड़का भक्तिन की बेटी के कमरे में विवाह से पहले ही जबरदस्ती घुस गया था, तो उसने उसके मुँह पर तमाचा मारा था। उस युवक ने पंचों का अपने पक्ष में कर यह निर्णय करा लिया कि उन दोनों का विवाह होगा। निश्चित रूप से यह स्त्री के अधिकार का हनन था। अतः यह घटना स्त्री के मानवाधिकार के कुचलने को दर्शाती है।

(ii) लेखक को जीजी के अन्धविश्वासों पर तनिक भी विश्वास नहीं था। जीजी कहती थी कि अगर हम इन्द्र भगवान को जल नहीं देंगे तो वे हमें पानी कैसे देंगे, मेढ़क–मंडली पर जल डालना उनको समर्पितअर्ध्य है यदि मनुष्य दान में कुछ देगा नहीं तो पायेगा कैसे? ऋषियों में भी दान और त्याग की महिमा गाई है। असली त्याग वही है कि जो चीज हमारे पास कम है उसे ही लोक–कल्याण के लिए दे दिया जाये तभी दान का फल मिलेगा।

(iii) अमावस्या की काली रात थी। प्रकाश के नाम पर केवल तारों की रोशनी ही थी। ऐसी अँधेरी रात में केवल सियारों का रोना व उल्लु की डरावनी आवाजें ही रात्रि में छाई हुई निस्तब्धता का भेदन कर सकती थीं। बच्चों के 'माँ–माँ' करके रोने तथा 'हरे राम, हे भगवान' की आवाजें तो जैसे मुँह से निकल कर मुँह में ही समाप्त हो जाती थी।

13. (i) लोभ के कारण ही व्यक्ति आकर्षण में फँसता है और उसके मन में इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं, जैसे–विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ खरीदना, बाजार में घूमने जाना, नए जमाने की नई–नई वस्तुओं का संग्रह करना इत्यादि। इस प्रकार बाजार में माँग उत्पन्न होती है। यह लोभ मनुष्य को अंधा कर देता है।

(ii) हम इस बात से पूरी तरह सहमत हैं क्योंकि आज हम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र, पढ़ाई, आवास, राजनीति, धार्मिक स्थल आदि सभी में लिंग, जाति, धर्म के आधार पर होने वाले विभिन्न भेदभाव देखते हैं किन्तु बाजार इस विचारधारा से अलग होता है।

बाजार को किसी लिंग, धर्म या जाति से कोई लेना–देना नहीं होता है, वह हरएक के लिए खुला होता है। उसके लिए जो हर कोई केवल और केवल ग्राहक है जहाँ लोग आकर अपनी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं। इस प्रकार यदि हम देखें तो बाजार एक प्रकार की सामाजिक समता की रचना करता है।

(iii) लेखक के शिरीष के बहाने अन्य वृक्षों कनेर व अमलतास का वर्णन किया है। ये भी ग्रीष्म ऋतु में फूलते हैं, किन्तु उनकी तुलना हम शिरीष से नहीं कर सकते, क्योंकि ये कम समय के लिए खिलते हैं। वसंत में पलाश खिलता तो है, पर उसकी अवधि भी बहुत ही कम समय की होती है। रईसों के बगीजों के प्रसंग में लेखक ने अशोक, अरिष्ठ (रीठा नामक वृक्ष), पुन्नाग, बकुल का वर्णन किया है। भारत में ये सभी वृक्ष पाए जाते है।

14. (i) यशोधर बाबू अंतर्द्वंद्व से ग्रस्त व्यक्ति है। वे पुरानी पीढी के प्रतिनिधि हैं वे पुराने मूल्यों को स्थापित करना चाहते है। परन्तु बच्चे उनकी बातों को नही मानते। वे अपने बेटे की नौकरी से खुश है। परन्तु अधिक वेतन पर उन्हें संशय है। वे नयापन भी अपनाते हैं। उन्हें अपनी सोच व आदर्शो के प्रति संशय है। वह अकसर नकली हँसी का सहारा लेते है।

(ii) लेखक का दादा बडा गुस्सैल स्वभाव का था। वह जरा–सी बात पर उसे और उसकी माँ को मारता था। माता के मन में उसके दादा की एक बरहैला सूअर जैसी छवि बैठी हुई थी जो कि पढाई की बात सुनकर उस पर बरहैला सूअर की तरह गुर्राता था। अतः लेखक और उसकी माँ दादा से पढ़ाई की कोई बात नही कह सकते थे। लेखक की माँ भी चाहती थी कि वह पढ़ जाय। लेकिन वह उसके दादा से इस विषय में कुछ नही कह सकती थी।

(iii) खुदाई में ताँबे और काँसे की काफी सुईयाँ मिली है। सोने की भी तीन सुइयाँ मिली थी, जिनमें से एक तो दो इंच लम्बी थी। यह माना जाता है कि यह बारीक कशीदाकारी में इस्तेमाल होती होगी, साथ ही हाथी दाँत और ताँबे के सुए भी मिले है। यह माना जाता है कि शायद इनसे दरियाँ बुनी जाती थी। यद्यपि वहाँ दरी का कोई नमूना नहीं मिला है।